











# विचार मंथन

# मर्यादा हुई आत्माओं की अंतर आवाज़...

राजनीति में अंतराला का साथ ही मृतात्मा जैसा ही व्यवहार किया जाता है। उन्हें मारतारब से अलंकृत किया जाता है। खास बुद्धाव के समय आलाउद्दीन को समानित करने का बड़ा फ़िल बिलात है। अंतराला पार्टी का छिप, सिप नहीं मानती। जो उसका आलान करता है, उसे आपीरवट देते हैं। दरअसल अंतराला राजनीति से ऊपर उठकर फैसला करती है। लेकिन फैसला करने से पहले घृणीती देखती है। अंतराला को जागृत करना, मुद्द़ को उत्पन्न आवज सुनाना बड़ा तकनीकी काम है। पहले इस विषय में कांगड़ी दश थे। अब ये दक्षता भाजपा-सीख गये हैं। वे हिमाल लो या बिहार, किंसी भी राज ने किंसी भी दल के विधायक, संसद की नई हुई आला को जगाने की सुधारी ले लेते हैं। जिन नेताओं को आला जीवित होती है, उन्हें पिछित कर उनकी आला को मार देते हैं। मरी हुई आला की आवज सुनाना किंसी जीवित नेता को आला की आवज से ज्यादा मुख्य होती है। निरट होती है। साथ सुनाई देती है। अंतराला को बुलवाने से पहले उसे जागृत करना पड़ता है। आला काले तिल, काले द्रव, काले धन और पत्तिल के सूखे धानी के सरदार के तेल से खुद होती है। आप जितना काला धन आरपण करेंगे, सोनी हुई अंतराला उतनीं जल्दी जागेगी, बोलेगी। इतना तेज बोलेगी कि बहरा मी सुन ले। कान बाले तो सुन ही सकते हैं। इसके किसी पाति, पुणारी की जस्त नहीं होती। छठे कान तक इसकी आवज जाती ही नहीं है। आलाएं न मरें जनादेश का अपहरण असंभव है। मारत में जहां जहां बिना चुनाव के जनादेश बदला गया वहां पहले आलाओं को मारा जाता है। आला का कल्प ही क्रास वोटिंग दल बदल की सहेदर है।



लेखक राजस्थान सरकार से  
मान्यता प्राप्त स्वतंत्र पत्रकार है। जो ऐसा नहीं कर पाते वे आत्म

0

है, लेकिन उसकी आवाज होती है। आवाज जीवित आत्माओं की मुख होती है। इसे या तो औझा सुन पाते या नेता। आवाज सुनकर जौ फैसला होते हैं, उन्हें क्रास ब्रीड फैसला कह है। इन फैसलों से जो भी होता है उन्हें वर्णनकर कहा जाता रहा है। राजनीति में सबसे पहले अंतरात्मा की आवाज कांग्रेस ने सुनी थी। वैसे कांग्रेस का पता था कि राजनीति में अधिकांश लोग अपनी आत्मा को मारकर आ जाते हैं। जो जीवित आत्मा के साथ राजनीति के आंगन में कदम रखते हैं, उनका आत्मा को सप्रयास मार दिया जाता है। राजनीति में आत्मा की आवाज प्रगति में सबसे बड़ी बाधा है। अंततोगत नेता को अपनी अंतरात्मा मारना पड़े

ये और शरीर दोनों से हाथ थोड़े बैठते हैं। आजादी से पहले नेता आत्मा के साथ राजनीति में आता था, इसीलिए उससे अंग्रेज हार गए। आत्मा से काम करने वालों को आज 75 साल बाद बैर्झमान, वंशवादी और राष्ट्रद्राही कहा जाता है। राजनीति में आत्माएं तो पहले आप थीं, उस जगत में महात्मा भी होती थीं। गुजरात को मोहनदासकर मरचंद गांधी के पास महात्मा थीं, हालांकि संघी ऐसा नहीं मानते। वे गोड़से को महात्मा कहते हैं। यानि महात्मा को भी भारतरक्त की तरह विवादास्पद बनाने की कोशिश जारी है। बत अंतरात्मा की आवाज की हो रही है। सबसे पहले तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने अंतरात्मा की आवाज को पहचाना। आवाज दी। समय के नेताओं की अंतरात्मा जारी नेताओं ने अपनी अपनी अंतरात्मा वाला आवाज सुनी और इंदिरा गांधी वाला पसंद के प्रत्याशी को राष्ट्रपति चुना लिया था। अंतरात्मा की चौतरफा जय हुई। राजनीति में अंतरात्मा के साथ ही मृतामा जैसा ही व्यवहार किया जाता है। उन्हें भारतरक्त से अलंकृत किया जाता है। खास चुनाव के समय आत्माओं को समानित करने का बड़ा फल मिलता है। अंतरात्मा पार्टी की छिप, सिप नहीं मानती। जो उसका आव्हान करता है, उसे आशीर्वाद देती है। दरअसल अंतरात्मा राजनीती से ऊपर उठकर फैसला करती है लेकिन फैसला करने से पहले चढ़ौटी देखती है। अंतरात्मा को जागृत करने

A woman's face is shown in profile, facing right, with her mouth slightly open as if singing. Her hair and the background are composed of dynamic, colorful flames in shades of orange, yellow, red, and blue, creating a sense of intense energy and passion. The overall mood is dramatic and powerful.

तकनीकी काम है। पहले इस विधा में कांग्रेसी दक्ष थे। अब ये दक्षता भाजपाई सीख गये हैं। वे हिमाचल हो या बिहार, किसी भी राज्य में किसी भी दल के विधायक, सांसद की मरी हुई आत्मा को जगाने की सुपारी ले लेते हैं। जिन नेताओं की आत्मा जीवित होती है, उन्हें चिह्नित कर उनकी आत्मा को मार देते हैं। मरी हुई आत्मा की आवाज सुनना किसी जीवित नेता की आत्मा की आवाज से ज्यादा मुखर होती है। निडर होती है। साफ सुनाई देती है। अंतरात्मा को बुलवाने से पहले उसे जागृत करना पड़ता है। आत्मा काले तिल, काले वस्त्र, काले धन और पतंजलि के शुद्ध धानी के सरसों के तेल से खुश होती है। आप जितना काला उतनी जल्दी जागेंगी, बालेंगी। इतना तेज बोलेगी कि बहरा भी सुन ले। कान बाले तो सुन ही सकते हैं। इसमें किसी पंडित, पुजारी की जरूरत नहीं होती। छठे कान तक इसकी आवाज जाती ही नहीं है। आत्माएं न मरें तो जनादेश का अपहरण असंभव है। भारत में जहां जहां बिना चुनाव के जनादेश बदला गया वहां पहले आत्माओं को मारा जाता है। आत्मा का कल्प ही तो क्रास वोटिंग कहलाती है। क्रास वोटिंग दल बदल की सहारे है। ये अजर अमर है। लैकिन ये मृत आत्माएं हैं। इनके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की जा सकती। दुनिया के लोकतात्रिक देशों में हमारे देश की मरी हुई आत्माओं को लेकर कोई सानी नहीं है। हमें राजनीति

आत्माओं पर गव है। मरी हुई आत्मा हमेशा लोकतंत्र के काम आती हैं हमारा लोकतंत्र मरी हुई आत्मा अका लोकतंत्र है। हमारी लोक सभा विधानसभाएं मरी हुई अंतरात्माओं से भरी पड़ी हैं। एक खोजिए, दस मिल सकती हैं। मेरी जीवित आत्मा मुझे हरदम धिक्कारने की कोशिश करती है। शुभचिंतक कहते हैं कि पड़ि जी कुछ दिनों के लिए अपनी आत्मा को मरने के लिए तैयार कर लीजिए मालामाल हो जाएँ। घर बालों के तमाम शिकायतें दूर हो जाएँगी। को आपको कंगाल, अलाल होने का ताना नहीं मरेगा। लेकिन मैं हूँ विकिसी जीवित आत्मा की सलाह नहीं मानता।

# ट्रैक्टर नात पर मा दाहदा नापदड़ ?

द्रैपर्ट से किसान अपना कसल बांगार न पहुंचता है। खाली बाज आदि इसा पर लाता ल जाता है। जुआ बुवाई के अलावा भी खेतों में इसके और भी कई काम होते हैं। चौंकि ट्रैक्टर किसानों व कृषि के मुख्य साधन के श्रेणी में आता है इसलिए सरकार ने यातायात के कानूनों में इसके लिये अनेक अलग प्रावधान किये हैं। इसे कृषि प्रसाधन की श्रेणी में रखा गया है न कि यातायात के वाहन की श्रेणी में। इसीलिए इससे सम्बंधित यातायात नियम व यातायात शुल्क, मार्ग कर आदि में कई तरह की विशेष छूट भी दी गयी है। बावजूद इसके कि ट्रैक्टर यातायात के वाहनों की श्रेणी में नहीं आता फिर भी क्या नेता तो क्या प्रशासन, क्या किसान तो क्या आम लोग सभी इसके उपयोग अपनी सुविधानुसार करते हैं। देश का कोई भी चुनाव बिना ट्रैक्टर ट्रॉली का इस्तेमाल किये संभव ही नहीं। नेताओं की चुनावी रैलियों में भीड़ इकट्ठी करने से लेकर उनके चुनावी जुलूसों की लम्घाई बढ़ाने में, चुनाव प्रचार में और अंत में मतदाताओं को घरों से निकाल कर पोलिंग स्टेशन तक पहुंचाने और बाद में उनके विजय जुलूस तक ट्रैक्टर ट्रॉली जमकर इस्तेमाल की जाती है।



लाखका स्वतंत्र पत्रकार

A photograph showing a man operating a red tractor with a blue trailer, plowing a field. The tractor has large black tires and a front-mounted plow. The man is wearing a light-colored shirt and shorts. The background shows a fence and some trees under a clear sky.

इस बार भी किसानों ने ट्रैक्टर को हात  
अपना ह्वासराथी लूँ चुना है। दरअसल  
आंदोलन के दौरान ट्रैक्टर व उसके  
जुड़ी ट्रॉली के बेल किसानों को उनसे  
आंदोलन स्थल तक लाने ले जाने वाले  
ही काम नहीं करता। बल्कि आंदोलन  
स्थल पर किसान इसे अपने चलाए  
फिरते घरों की तरह भी इस्तेमाल  
करते हैं। आंदोलन लंबा खिंचाव  
की स्थिति में यही ट्रैक्टर और उन  
लगी ट्रॉली उनके अस्थाई घर और  
गोदाम के रूप में भी काम करती हैं।  
राशन से लेकर कपड़ा कंबल ईंध  
आदि सभी सामग्री इन चलते फिर  
ह्वाडिपोह में रखी जाती है। किसान  
हमेशा से ही ट्रैक्टर को अपनी खेती  
किसानी के सबसे मुख्य साधन वें  
रूप में प्रयोग करता आ रहा है। इस  
ट्रैक्टर से किसान अपनी फसल बाजार  
में पहुँचता है। खाद बीज आदि इस

और भी कई काम होते हैं। चूँकि ट्रैक्टर किसानों व कृषि के मुख्य साधन की श्रेणी में आता है इसलिए सरकार ने यातायात के कानूनों में इसके लिये अनेक अलग प्रावधान किये हैं। इसे कृषि प्रासाधन की श्रेणी में रखा गया है न कि यातायात के वाहन की श्रेणी में। इसलिए इससे सम्बंधित यातायात नियमों व यातायात शुल्क, मार्ग कर आदि में कई तरह की विशेष छूट भी दी गयी है। बावजूद इसके कि ट्रैक्टर यातायात के वाहनों की श्रेणी में नहीं आता फिर भी क्या नेता तो क्या प्रशासन, क्या किसान तो क्या आम लोग सभी इसका उपयोग अपनी सुविधानुसार करते हैं। देश का कोई भी चुनाव बिना ट्रैक्टर ट्रॉली का इस्तेमाल किये संभव ही नहीं। नेताओं की चुनावी रैलियों में भी डैड इकट्टी करने से लेकर उनके चुनावी

रारों से निकाल कर पोलिंग स्टेशन पर उपलूप्त तक में ट्रैक्टर ट्रॉली जमकर स्टेमाल की जाती है। राजस्थान जाब जैसे राज्यों में तो कई जगह ट्रैक्टर की इन्हीं ट्रॉलियों को आपने जोड़कर बड़ी से बड़ी स्टेज बना जाती है जिनपर मुख्यमंत्री स्वतंत्र होता तक भाषण देते हैं। उस समय गायद प्रशासन अपनी आँखें मूँह हता है। उस समय उसे यह नहीं जर आता कि ट्रैक्टर सिफ़र खेतों में साधन है यातायात या राजनीतिक स्टेमाल का नहीं। इसी तरह गांव वेंगादी ब्याह आदि किसी भी समारोह में ट्रैक्टर का इस्टेमाल परिवार वेंगों व सामानों को लाने ले जाते हैं खब किया जाता है। इसी तरह राज्य के अनेक राज्यों में ट्रैक्टर व योग धार्मिक समागम या तोर्थ स्थल

तौर पर किया जाता है। कई धार्मिक मेले व समागम तो इतने विशाल होते हैं कि सरकार द्वारा बड़े पैमाने पर विशेष बसें चलाने के बावजूद तीर्थयात्रियों का सुगम आवागमन संभव नहीं हो पाता। उस समय के बल ट्रैक्टर ट्रॉलियाँ ही इस अंतर को पूरा कर पाती हैं। पंजाब व हरियाणा के होला मोहल्ला और कपाल मोचन जैसे प्रमुख मेलों की तो ट्रैक्टर ट्रॉली के इस्तेमाल के बिना कल्पना ही नहीं की जा सकती। किसान को प्रायः खुद अपनी पारिवारिक जरूरतों के लिये भी ट्रैक्टर ट्रॉली का इस्तेमाल करना पड़ता है। लेकिन उस समय कभी भी सरकार द्वारा न तो ट्रैक्टर के चालान किये जाते हैं न ही उन्हें यातायात के कानून याद दिलाये जाते हैं। परन्तु जब जब किसानों द्वारा इहीं ट्रैक्टर ट्रॉलीज का प्रयोग किसान आंदोलन में अपने जाता है केवल उसी समय सरकार को किसानों को ट्रैक्टर ट्रॉली सम्बन्धी नियमों की याद आती है। सोचने का विषय है जो किसान नेताओं के जुलूस रैलियों से लेकर चुनाव संपन्न करने तक व धर्मस्थलों से लेकर बड़े बड़े धार्मिक व राजनैतिक समागमों में अपने इस कृषि संसाधन का प्रयोग करने के लिये लोगों को उपलब्ध करता हो वही किसान अपने कृषि किसानी के अस्तित्व की रक्षा के लिये चलाये जाने वाले आंदोलनों में इसका प्रयोग क्यों नहीं कर सकता? पिछले दिनों हरियाणा पंजाब की सीमा पर लगते शम्भू व खोनरी बाँड़र पर पंजाब से दिल्ली जाने वाले किसानों के काफिले को पुलिस द्वारा रोका गया। उस समय कुछ दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएं भी घटीं। इसी दोरान पुलिस की एक कर यही कहा गया कि उच्च न्यायालय व उच्चतम न्यायालय के निर्देशनुसार पुलिस किसानों को ट्रैक्टर ट्रॉलीयों का इस्तेमाल मुख्य मार्ग पर यातायात के साधन के रूप में नहीं करने देगी। इसके मतलब तो साफ है कि सरकार हर जगह तो ट्रैक्टर सम्बन्धी यातायात नियमों की अनदेखी का सक्ती है परन्तु किसान आंदोलन में किसानों को वही कानून याद दिलाये जाते हैं? हाईट्रैक्टरल एसोसिएशन पर अपनाये जाने वाले इस दोहरे मापदंड का मतलब साफ है कि सरकार किसानों के इस संसाधन से डरती और घबराती है? शायद यही वजह है कि प्रशासन कंसिफ किसान आंदोलन के समग्र ही ट्रैक्टर सम्बन्धी यातायात कानून आते हैं।

हर प्रकार की लोकतांत्रिक चर्चा पूरा होने के बाद ही देश में समान नागरिक प्रेस को बताया कि 12 फरवरी 2022 को लिया संकल्प आज पूरा हआ है। पति या पत्नी का एक दुसरे से पुनर्विवाह बिना किसी शर्त के अनुमन्य होगा, वहीं उन्होंने बिहार में लागू नहीं करने की बात कहते थे। अब मुख्यमंत्री नीतीश को धार्मिक संकीर्णता छोड़कर समान नागरिक संहिता की बात करनी चाहिए



जितन्द्र कुमार | सन् १९८५

दुनिया के अधिकांश दशा में नागरिकों का नानून सबके लिए समान है। भारत वोट बैंक की राजनीति करने वाले लोगों समान नागरिकता सहिता का पुरजोड़ विरोध करते हैं। लेकिन किसी भी धर्मनिरपेक्ष देश के लिए कानून, धर्म के आधार पर नहीं होनी चाहिए। यह देश और राज्य धर्मनिरपेक्ष है, तो कानून धर्म पर आधारित कैसे हो सकता है? भारत में समान नागरिकता सहित लागू करने से संबंधित कुछ राज्यों ने सर्वान्वच न्यायालय और उच्च न्यायालय के सेवनिवृत्त मुख्य न्यायाधीशों व अध्यक्षता में समर्पित बनी है, उसमें समक्ष विभिन्न धर्मों के लोग अपने-परे के लोगों के लिए समान हैं।

संहिता लाने के लिए प्रतिबद्ध है। भारतीय संविधान में समान नागरिक संहिता का उल्लेख भाग-4 के अनुच्छेद -44 में है। इसमें नीति निर्देश दिया गया है कि समान नागरिक कानूनहाल लागू करना हमारा लक्ष्य होगा। डॉ भीम राव अंबेडकर भी इस संहिता के पक्षधर थे। उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह थामी के नेतृत्व वाली सरकार ने 4 फरवरी 2024 को मंत्रिमंडल की बैठक में समान नागरिक संहिता के मसौदे को मंजूरी दी। उसके बाद उत्तराखण्ड विधानसभा में समान नागरिक संहिता (यूसीसी) बिल रखा गया। विधान सभा में 80 प्रतिशत सहमति के साथ प्रस्ताव स्वीकृत किया गया। इस प्रकार उत्तराखण्ड विधानसभा में यूसीसी बिल पास होने के बाद उत्तराखण्ड समान नागरिक संहिता लागू करने वाला देश का पहला राज्य बन गया। विधान सभा में मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह थामी ने कहा कि आज इस ऐतिहासिक क्षण का साक्षी बनते हुए, न केवल इस सदन को बल्कि उत्तराखण्ड के प्रत्येक नागरिक को इस विधेयक की मांग पूरे दैश को थोड़ा जिसे आज देवभूमि में पारित किया गया।

समान नागरिक संहिता लागू हो जाए पर विशेष रूप से अल्पसंख्यक वर्ग व महिलाओं की स्थिति में व्यापक सुधार आयेगा। समान नागरिकता संहिता बनाने के बाद उनके लिए अपने पिता व संपत्ति पर अधिकार जताने और गोले लेने जैसे मामलों में एक समान नियम लागू हो सकेगा। समान नागरिक संहिता लागू होने से में सभी धर्मों, समुदायों ने लिए एक समान, एक बराबर कानून होगा। अब लगता है कि पूरे भारत नागरिकों के लिए एक समान नागरिक संहिता लागू करने का प्रयास होगा। इस प्रकार उत्तराखण्ड में समान नागरिक संहिता बिल के लागू होने के बाद राज्य में बाल विवाह पर रोक, एक पति या पत्नी वैविध्य रहते कोई नागरिक दूसरा विवाह नहीं कर सकेगा, लिव-इन में रहने वाली महिला को अगर उसका पुरुष साथी छोड़ देता है तो वह उससे गुजारा भर्ता पाने का दावा कर सकती, हलाल है।

पुनर्विवाह से पहले उन्हें किसी तीसरे व्यक्ति से विवाह करने की आवश्यकता नहीं होगी। उत्तराखण्ड में आबादी की 82.97 प्रतिशत हिन्दू, 13.95 प्रतिशत मुस्लिम, 2.34 प्रतिशत सिख और 0.74 प्रतिशत अन्य धर्म के लोग हैं। जबकि मिजोरम में 87.16 प्रतिशत ईसाई, 1.35 प्रतिशत मुस्लिम, 2.75 प्रतिशत हिन्दू और 8.74 प्रतिशत अन्य धर्म के लोग हैं। वहाँ लक्ष्यद्वीप में 96.58 प्रतिशत मुस्लिम, 2.77 प्रतिशत हिन्दू, 0.49 प्रतिशत ईसाई और 0.16 प्रतिशत अन्य लोग हैं। देखा जाय तो गुजरात और हिमाचल प्रदेश विधानसभा चुनाव के समय समान नागरिक सहिता को लागू करने का मुद्दा भारतीय जनता पार्टी के प्रमुख मुद्दों में शामिल था। समान नागरिक सहिता को लेकर देश में समय-समय पर बहस होते रही है और लोग अपने विचार रखते रहे हैं। अपने विचारों में कोई इसे एक खास धर्म के खिलाफ बताते हैं, तो कोई इसे देश हित में बताते हैं। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने ऐसी विचारों को निपटने के लिए एक विशेष अधिकारी नियुक्त किया है।

कुमार और उनकी पार्टी जदयू भारतीय जनता पार्टी के साथ बिहार में सरकार चला रही है। चर्चा चल रही है कि 2024 के लोकसभा चुनावों से पहले भारतीय जनता पार्टी समान नागरिक सहिता कानून बना सकती है। ऐसे भी समान नागरिक सहिता भाजपा के एंडेंड में जनसंघ काल से ही रहा है और पार्टी तमाम अवसरों पर इसे लागू करने की प्रतिबद्धता भी जताती रही है। भारत में आपाराधिक कानून और उस पर सज्जा का प्रावधान सभी धर्मों के अन्यथियों पर समान रूप से लागू होता है, यानि भारतीय दंड सहिता (आईपीसी) में सभी धर्म के लोगों के लिए सज्जा का कानून समान है। ऐसी विधियों में प्रश्न यह उठता है कि फैमली लॉ में समानता क्यों नहीं होनी चाहिए? सभी दलों को समान नागरिक सहिता लागू करने के लिए समाहिक प्रयास करना चाहिए। यह राष्ट्र और मानवता के लिए अच्छा होगा। क्योंकि अगर कोई पूरुष किसी महिला से शादी करता है तो नैसर्गिक है। लेकिन कोई एक से ज्यादा शादी है तो क्या?

समान नागरिक सहिता लागू होने पर ऐसा लगता है कि अल्पसंख्यक देश के मुख्य धारा में आ जायेंगे। उत्तराखण्ड में समान नागरिक सहिता बिल के लागू होने के बाद देहरादून स्थित जामनगर दशहरा काजी मोहम्मद अहमद कासमी, मुस्लिम सेवा संगठन वे अध्यक्ष नईम कुरैशी, इमाम संगठन के अध्यक्ष मुफ्ती ईस, नुमाइंदा गुरु याकूब सिद्दीकी, लताफत हुसैन और राज्य बेंग, औल ईंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के अध्यक्ष मौलाना खालिम सेफुल्लाह रहमानी, बोर्ड के महासचिव मोहम्मद फजलुर्रहीम मुजहीदी, औल ईंडिया मजलिस ए-इतेहादुल मुस्लिमीया प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी समेत देश भर में मुस्लिम रहनुमाई का दम भरने वाले आज कई नेता हैं जो कि यूनिफॉन्स सिविल कॉड (समान नागरिक सहिता का खुलकर विरोध कर रहे हैं)। जबकि मुझे लगता है कि अच्छा यह होगा कि इसकी खुबियों को सभी मुस्लिम समझे विरोध छोड़ उत्तराखण्ड सरकार की इनियियटिव पर उसकी प्रशंसा करने के लिए एक बड़ा बदलाव हो जाए।

# सारण, चंपारण

## संक्षिप्त खबरें

बेंगलूरु के बड़े बदगांशों ने छु: लाख लूट कर घर लौट बैठे। छपरा। नगर धाना क्षेत्र के श्री नंदन पथ दिवान और शक्ति डायोनोसिटिक सेंटर में बीती रात हड़ियारा बंद अपराधियों ने धाना बोलकर करीब 6 लख रुपए लूट कर आमला प्रकाश में आया है। हालांकि पुलिस धान लाख की राशि नी बाटा रही है। इसकी जानकारी के अनुसार मंगलवार की रात हड़ियारा से लैस आधा दर्जन नकारात्मक पांच घंटे बानार कर पैसे और सोने के बेल लूट लिए।

## गौतिक सत्यापन करते प्रदायिकारी

छपरा। जिला निवाचन प्रदायिकारी अनुमंडल एवं प्राचंड स्थानीय अपराधिकारी सभी मतदान के दोनों पर जाकर स्थलीय जाँच कर रहे हैं। भारत निवाचन आयोग द्वारा निवाचित मानक के अनुरूप सभी मतदान केंद्रों पर सुनिश्चित न्यूट्रिटन सुविधा उपलब्ध कराई रही है। इसमें मुख्य रूप से बिजली, पानी, शैक्षणिक एवं अपराधिकारी की टीम द्वारा निवाचन के अलाकाएं में आज जिला के सभी मतदान के द्वारा निवाचन के अपराधिकारी अनुमंडल एवं प्राचंड स्थानीय अपराधिकारी सभी मतदान के दोनों पर सुनिश्चित न्यूट्रिटन सुविधा उपलब्ध कराई रही है। इसकी जानकारी के अनुसार मंगलवार की रात हड़ियारा से लैस आधा दर्जन नकारात्मक पांच घंटे बानार कर पैसे और सोने के बेल लूट लिए।

## प्रदायिकारी

## प्रदायिकारी</h2







# रिटायरमेंट ले सकते हैं यशस्वी टेस्ट रैकिंग में 12वें स्थान पर आए टेनिस स्टार एंडी मरे

कहा- कुछ महीनों में संन्यास ले सकता हैं हार्ड कोर्ट पर 500 मैच जीते



को कहा, शायद मेरे पास ज्यादा समय नहीं बचा है लेकिन मैं अपले कुछ महीनों में जितना हो सके उतना अच्छा प्रदर्शन करेंगा। एंडी मेरे ने करियर में तीन ग्रैंड स्लैम जीते हैं। उन्हें 2 बार विम्बलडन और एक बार यूएस ओपन जीता है।

## हार्ड कोर्ट पर 500वां जीते

मेरे ने हार्ड कोर्ट पर अपनी 500वीं जीत हासिल की और इस उपलब्धि तक पहुंचने में रोजाना फेडर, नोवाक जोकोविच, आदि आगामी और राफेल नडाल के साथ शामिल हो गए। मेरे ने इसपर कहा, हाँ, यह बुग नहीं है। सालों से हार्ड कोर्ट मेरे लिए एक बेहतरीन पिच रही है, मुझे इस पर बहुत गर्व है।

**मुझे खेलना पसंद है, लेकिन बॉडी साथ नहीं दे रही- गरे**

मेरे ने कहा, मुझे अब भी प्रतिस्पर्धी करना पसंद है और ऐसा भी पसंद है। जहिर है, जैसे-जैसे आप बढ़े होते जाते हैं, युवा लोगों के साथ मुकाबला करना और अपने शरीर को फिट और तोतोजा रखना कठिन होता जाता है। मेरे ने कहा, कभी-कभी मैं कोटे पर जो कहता हूँ लोग उसे बहुत पढ़ते हैं और यह हमेशा तर्कसंगत नहीं होता है। लेकिन हाल कोटे मुझसे इसके बारे में हर समय पूछता है।

आईसीसी ने जारी की रैकिंग; बॉलिंग में बुमराह टॉप पर बरकरार

नईदिल्ली (एंजेसी)। भारतीय ओपनर यशस्वी जायसवाल आईसीसी टेस्ट रैकिंग में 12वें नंबर पर पहुंच गए हैं। बुधवार को जारी ताजा टेस्ट बॉलिंग रैकिंग के टॉप-10 में भारत का केवल एक बल्लेबाज शामिल है। विराट कोहली को 2 स्थान का नुकसान हुआ है, वह 9वें नंबर पर खिलाफ गए हैं। न्यूजीलैंड के केन विलियमसन टॉप पर बरकरार हैं। बॉलिंग रैकिंग में भारतीय तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह टॉप पर कायम हैं, जबकि दूसरे नंबर और अधिन्यता की बीच है। तीसरे नंबर पर साउथ अफ्रीका के कगिसो रबड़ा हैं।

यशस्वी करियर बेस्ट 12वें पोंजिशन पर पहुंचे - लेफ्टी ऑनर यशस्वी टेस्ट बॉलिंग रैकिंग में तीन स्थान की छलांग के साथ करियर बेस्ट 12वें पोंजिशन पर पहुंचे। यशस्वी ने कासान रोहित शर्मा को पीछे छोड़ दिया है, जो एक स्थान के नुकसान



के साथ 13वें स्थान पर पहुंचता है। यशस्वी ने पांच मैचों की सीरीज के पहले छलांग के साथ करियर बेस्ट 12वें पोंजिशन पर पहुंचा। यशस्वी ने कासान रोहित शर्मा को पीछे छोड़ दिया है, जो एक स्थान के नुकसान

बुमराह नंबर-1 टेस्ट गेंदबाज - जसप्रीत बुमराह आईसीसी की टेस्ट बॉलर्स रैकिंग में नंबर-1 गेंदबाज बने हुए हैं। ऑफ

स्पिनर रविचंद्रन अश्विन दूसरे नंबर पर हैं। तीसरे स्थान पर साउथ अफ्रीका के कगिसो रबड़ा हैं। बुमराह 8 रोकरी को जारी रैकिंग में टेस्ट में नंबर-1 पोंजिशन हासिल करने वाले पहले भारतीय तेज गेंदबाज बने थे।

टॉप-5 ऑलराउंडर्स में 3 भारतीय - ऑलराउंडर्स रैकिंग में रोटींड जडेजा पहले और अधिन्यता दूसरे नंबर पर हैं। अक्षर पटेल पांचवें नंबर पर हैं। इस तरह टॉप-5 टेस्ट ऑलराउंडर्स रैकिंग में 3 भारतीय शामिल हैं। ऑलराउंडर्स रैकिंग में तीसरे नंबर पर बांगलादेश के शकिंच अल हसन और चौथे नंबर पर इंग्लैंड के जे रूट हैं। कसान बेन स्टोक्स 3 स्थान के नुकसान के साथ सातवें नंबर पर पहुंच गए।

टीम इंडिया टेस्ट में दूसरे नंबर पर - टीम इंडिया टेस्ट में लेफ्टी ऑनर यशस्वी टेस्ट बॉलिंग रैकिंग में दूसरे नंबर पर पहुंचे हैं। टीम इंडिया वनडे और टी-20 में पहले नंबर की टीम है। वनडे में ऑस्ट्रेलिया और टी-20 में न्यूजीलैंड दूसरे नंबर पर है।

# पांचवें टेस्ट से भी बाहर हो सकते हैं राहुल

इलाज के लिए विदेश गए; इंग्लैंड से सीरीज में एक ही मैच खेला

नईदिल्ली (एंजेसी)। केएल राहुल इंग्लैंड के खिलाफ पांचवें टेस्ट से भी बाहर हो सकते हैं। वह हैदराबाद में पहले टेस्ट के दौरान इंजर्ड हो गा था। इसके बाद वह बाकी 3 टेस्ट नहीं खेल सके। अब क्रिकेट जीर्ण की रिपोर्ट अनुसार, राहुल इलाज करने के लिए इंग्लैंड गए हैं। जिस कारण 7 मार्च से होने वाले 5वें टेस्ट में भी उनके खेलने पर संशय है। राहुल से पहले तेज गेंदबाज मोहम्मद शर्मा भी अपनी दौड़ी की सजरी करने के लिए लंदन गए थे। उनकी सजरी सफल रही, लेकिन उन्हें फैल्ड पर वापसी करने में 6 से 8 महीने का समय लग सकता है।



पहले टेस्ट में इंजर्ड हुए थे राहुल - केएल राहुल इंग्लैंड के खिलाफ हैदराबाद में पहले टेस्ट के दौरान इंजर्ड हो गा था। इसके बाद वह बाकी 3 टेस्ट नहीं खेल सके। अब क्रिकेट जीर्ण की रिपोर्ट अनुसार, राहुल इलाज करने के लिए इंग्लैंड गए हैं। जिस कारण 7 मार्च से होने वाले 5वें टेस्ट में भी उनके खेलने पर संशय है। राहुल से पहले तेज गेंदबाज मोहम्मद शर्मा भी अपनी दौड़ी की सजरी करने के लिए लंदन गए थे। उनकी सजरी सफल रही, लेकिन उन्हें फैल्ड पर वापसी करने में 6 से 8 महीने का समय लग सकता है।

हेड कोच गैरी स्टीड बोले, टीम को लगा है इंटका

न्यूजीलैंड की टीम के हेड कोच गैरी स्टीड ने कहा, डेवन कॉन्वे के लिए एक महत्वपूर्ण मैच से ठीक पहले बाहर हो गए थे। फिर बुधवार को कॉन्वे भी बाहर हो गए हैं। उनके दूसरे टेस्ट में भी खेलने को लेकर सर्वसंयोग है।

हेड कोच गैरी स्टीड बोले, टीम को लगा है इंटका

न्यूजीलैंड की टीम के हेड कोच गैरी स्टीड ने कहा, डेवन कॉन्वे के लिए एक महत्वपूर्ण मैच से ठीक पहले बाहर हो गए थे। फिर बुधवार को कॉन्वे भी बाहर हो गए हैं। उनके दूसरे टेस्ट में भी खेलने को लेकर सर्वसंयोग है।

हेड कोच गैरी स्टीड बोले, टीम को लगा है इंटका

न्यूजीलैंड की टीम के हेड कोच गैरी स्टीड ने कहा, डेवन कॉन्वे के लिए एक महत्वपूर्ण मैच से ठीक पहले बाहर हो गए थे। फिर बुधवार को कॉन्वे भी बाहर हो गए हैं। उनके दूसरे टेस्ट में भी खेलने को लेकर सर्वसंयोग है।

हेड कोच गैरी स्टीड बोले, टीम को लगा है इंटका

न्यूजीलैंड की टीम के हेड कोच गैरी स्टीड ने कहा, डेवन कॉन्वे के लिए एक महत्वपूर्ण मैच से ठीक पहले बाहर हो गए थे। फिर बुधवार को कॉन्वे भी बाहर हो गए हैं। उनके दूसरे टेस्ट में भी खेलने को लेकर सर्वसंयोग है।

हेड कोच गैरी स्टीड बोले, टीम को लगा है इंटका

न्यूजीलैंड की टीम के हेड कोच गैरी स्टीड ने कहा, डेवन कॉन्वे के लिए एक महत्वपूर्ण मैच से ठीक पहले बाहर हो गए थे। फिर बुधवार को कॉन्वे भी बाहर हो गए हैं। उनके दूसरे टेस्ट में भी खेलने को लेकर सर्वसंयोग है।

हेड कोच गैरी स्टीड बोले, टीम को लगा है इंटका

न्यूजीलैंड की टीम के हेड कोच गैरी स्टीड ने कहा, डेवन कॉन्वे के लिए एक महत्वपूर्ण मैच से ठीक पहले बाहर हो गए थे। फिर बुधवार को कॉन्वे भी बाहर हो गए हैं। उनके दूसरे टेस्ट में भी खेलने को लेकर सर्वसंयोग है।

हेड कोच गैरी स्टीड बोले, टीम को लगा है इंटका

न्यूजीलैंड की टीम के हेड कोच गैरी स्टीड ने कहा, डेवन कॉन्वे के लिए एक महत्वपूर्ण मैच से ठीक पहले बाहर हो गए थे। फिर बुधवार को कॉन्वे भी बाहर हो गए हैं। उनके दूसरे टेस्ट में भी खेलने को लेकर सर्वसंयोग है।

## पती सारा ने बेटी को जन्म दिया, सोशल मीडिया में पोस्ट की फोटो

बाहर हो गए थे।

साउथ अफ्रीका के खिलाफ तीन शतक जमाए - विलियमसन ने साउथ अफ्रीका के खिलाफ तीन मैचों में तीन शतक जमाए। आखिर मैं राहुल चॉट के खिलाफ करने में परेशानी का सामान करना पड़ा। उन्होंने जून में जर्मनी में अपनी जांच का सफल ऑपेरेशन करना पड़ा।

भारतीय खिलाफ में खेलने पर बाहर हो गए थे। आखिर मैं राहुल चॉट के खिलाफ तीन मैचों में तीन शतक जमाए। आखिर मैं राहुल चॉट के खिलाफ तीन मैचों में तीन शतक जमाए।

भारतीय खिलाफ में खेलने पर बाहर हो गए थे। आखिर मैं राहुल चॉट के खिलाफ तीन मैचों में तीन शतक जमाए। आखिर मैं राहुल चॉट के खिलाफ तीन मैचों में तीन शतक जमाए।

भारतीय खिलाफ में खेलने पर बाहर हो गए थे। आखिर मैं राहुल चॉट के खिलाफ तीन मैचों में तीन शतक जमाए। आखिर मैं राहुल चॉट के खिलाफ तीन मैचों में तीन शतक जमाए।

**संक्षिप्त समाचार**  
तिरुवनंतपुरम से कासगोड जाने वाली  
वंदे भारत एक्सप्रेस के शौचालय से  
अचानक निकलने लगा था।

कोचिंच। तिरुवनंतपुरम से कासगोड जाने वाली वंदे भारत एक्सप्रेस को बुधवार सुबह एक तकनीकी समस्या का सामना करना पड़ा। मिली जानकारी के अनुसार, उसके एक शौचालय से अचानक धूआ निकलने लगा और पास के याहाँ के बिना करना पड़ा। रेलवे के एक अधिकारी ने कहा कि धूआ यांत्रिय था। इनबिल्ट अभियानक यांत्रिय होने के कारण निकला था। अधिकारी ने कहा कि क्या यह शौचालय के अंदर धूमपान करने वाले किसी व्यक्ति के कारण हुआ है या फिर किसी तकनीकी खारी के कारण हुआ। यह अभी पता नहीं चल पाया है। उन्हें कहा, परिणामस्वरूप, समस्या का सामाधान होने तक ट्रेन को यहाँ के पास अल्ला में लापांग 20 मिनट तक रोका गया और फिर सुबह करीब 9.24 बजे ट्रेन ने अपनी यात्रा फिर से शुरू की। अधिकारी ने कहा कि धूएं के कारण किसी भी यात्री को कोई खाली समस्या नहीं हुई, अल्ला में रुकने के कारण होने वाली देरी को भी कवर किया जाएगा।

### केरल में कम्युनिस्ट नेता की हत्या मामले में 12 को अम्बेड

कोचिंच। केरल हाई कोर्ट ने 2012 में कम्युनिस्ट नेता टीपी चंद्रशेखरन की समर्पणीय हत्या मामले में मांगलवार को 12 लोगों को उम्प्रैकेंट के सजा सुनाई। कोर्ट ने कहा कि राजनीतिक हत्याओं पर गंभीर कार्रवाई की यांत्रिय अवसर है, क्योंकि ये लोकान्वयन सिद्धांतों को हाशिए पर ले जाती हैं। रिवोल्यूशनरी मा॒र्क्सवादी पार्टी (आरएमपी) नेता चंद्रशेखरन की चार मई, 2012 को कांगड़ीकोड के ऑचियाम में हाया कर दी गई थी। जरिये एक जयसंकरण नामियां और चैम्पियन कौसर एक प्राप्तांक ने हत्या के लिए दोषी करार दिए गए 11 में से 10 लोगों को सुनाई गई उम्प्रैकेंट की सजा को बरकरार रखा। हाई कोर्ट ने दो अन्य केंके कृष्णन और जेओपी बाबू को भी उम्प्रैकेंट की सजा सुनाई। निचली अदालत ने दोनों को बरी कर दिया। इसके प्रत्यावर्त ने प्राप्तांक नेता के दोषी ठहराए गए और तीन वर्ष जेल की सजा पाए लांबा प्रदीप की सजा भी बरकरार रखी। कोर्ट की राजनीतिक हत्याओं पर गंभीर टिप्पणी निचली अदालत से उम्प्रैकेंट की सजा पाए कुन्हानंदन की अपील लंबित रहने के पाते हो गई। राजनीतिक हत्याओं पर गंभीर टिप्पणी करते हुए पीठ ने कहा, अधिकारी की संवैधानिक गारंटी का उपयोग करने से रोकने वाले ऐसे अपराधों से कठोरता से निपटा जाना चाहिए।

### लोकसभा चुनाव से पहले महाराष्ट्र कांग्रेस में फिर भगदड़

मुंबई, एजेंसी। लोकसभा चुनाव से पहले महाराष्ट्र कांग्रेस में फिर से उथल-पुथल नजर आ रही है। इसके पूर्व मंत्री बसवराज पाटिल नेता ने सोमवार को कांग्रेस पार्टी से इस्तीफा दे दिया। पाटिल 1999 से 2004 के बीच महाराष्ट्र सरकार में मंत्री रहे थे। वह ओमेश-लोहारा और औसा विधानसभा क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। वह 2019 के विधानसभा चुनाव में भी जग्यां के अभियन्यु परामर्श दे हार गए थे। कांग्रेस का दावा है कि पाटिल के हाथ का साथ छोड़ने से कोई फर्क नहीं पड़े वाला है। पार्टी नेता अभ्य सातुके ने बताया कि उनके साथ छोड़ने से कोई असर नहीं पड़ेगा, क्योंकि वह 2019 के चुनाव में हारने के बाद से जनता के साथ संपर्क में नहीं थे। बसवराज पाटिल मुरमक्कर को लेकर अब यह चर्चा है कि वो भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो सकते हैं। हालांकि, इसे लेकर अभी तक उनकी ओर से कोई अधिकारीक बयान नहीं आया है। मालम हो कि हाल के दिनों में महाराष्ट्र कांग्रेस के कई सीनियर नेताओं ने पार्टी की बैठक में दोषी ठहराया जा रहा है। उठान और बाबा सिंही के बाबू समर्थक पार्टी के बाबू सिंही ने यह जनकारी दी। भास्याकार के आरोप में उन्हें पहले ही दो मासमांते में दोषी ठहराया जा रहा है। जिसने उन्हें 10 साल के बीच जारी रखा है।

मंगलवार को सोमवार तक अभियन्यु परामर्श दे दिया। पाटिल 1999 से 2004 के बीच महाराष्ट्र सरकार में मंत्री रहे थे। वह ओमेश-लोहारा और औसा विधानसभा क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। वह 2019 के विधानसभा चुनाव में भी जग्यां के अभियन्यु परामर्श दे हार गए थे। कांग्रेस का दावा है कि पाटिल के हाथ का साथ छोड़ने से कोई फर्क नहीं पड़े वाला है। पार्टी नेता अभ्य सातुके ने बताया कि उनके साथ छोड़ने से कोई असर नहीं पड़ेगा, क्योंकि वह 2019 के चुनाव में हारने के बाद से जनता के साथ संपर्क में नहीं थे। बसवराज पाटिल मुरमक्कर को लेकर अब यह चर्चा है कि वो भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो सकते हैं। हालांकि, इसे लेकर अभी तक उनकी ओर से कोई अधिकारीक बयान नहीं आया है। मालम हो कि हाल के दिनों में महाराष्ट्र कांग्रेस के कई सीनियर नेताओं ने पार्टी की बैठक में दोषी ठहराया जा रहा है। उठान और बाबा सिंही के बाबू समर्थक पार्टी के बाबू सिंही ने यह जनकारी दी। भास्याकार के आरोप में उन्हें पहले ही दो मासमांते में दोषी ठहराया जा रहा है। जिसने उन्हें 10 साल के बीच जारी रखा है।

मंगलवार को सोमवार तक अभियन्यु परामर्श दे दिया। पाटिल 1999 से 2004 के बीच महाराष्ट्र सरकार में मंत्री रहे थे। वह ओमेश-लोहारा और औसा विधानसभा क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। वह 2019 के विधानसभा चुनाव में भी जग्यां के अभियन्यु परामर्श दे हार गए थे। कांग्रेस का दावा है कि पाटिल के हाथ का साथ छोड़ने से कोई फर्क नहीं पड़े वाला है। पार्टी नेता अभ्य सातुके ने बताया कि उनके साथ छोड़ने से कोई असर नहीं पड़ेगा, क्योंकि वह 2019 के चुनाव में हारने के बाद से जनता के साथ संपर्क में नहीं थे। बसवराज पाटिल मुरमक्कर को लेकर अब यह चर्चा है कि वो भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो सकते हैं। हालांकि, इसे लेकर अभी तक उनकी ओर से कोई अधिकारीक बयान नहीं आया है। मालम हो कि हाल के दिनों में महाराष्ट्र कांग्रेस के कई सीनियर नेताओं ने पार्टी की बैठक में दोषी ठहराया जा रहा है। उठान और बाबा सिंही के बाबू समर्थक पार्टी के बाबू सिंही ने यह जनकारी दी। भास्याकार के आरोप में उन्हें पहले ही दो मासमांते में दोषी ठहराया जा रहा है। जिसने उन्हें 10 साल के बीच जारी रखा है।

मंगलवार को सोमवार तक अभियन्यु परामर्श दे दिया। पाटिल 1999 से 2004 के बीच महाराष्ट्र सरकार में मंत्री रहे थे। वह ओमेश-लोहारा और औसा विधानसभा क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। वह 2019 के विधानसभा चुनाव में भी जग्यां के अभियन्यु परामर्श दे हार गए थे। कांग्रेस का दावा है कि पाटिल के हाथ का साथ छोड़ने से कोई फर्क नहीं पड़े वाला है। पार्टी नेता अभ्य सातुके ने बताया कि उनके साथ छोड़ने से कोई असर नहीं पड़ेगा, क्योंकि वह 2019 के चुनाव में हारने के बाद से जनता के साथ संपर्क में नहीं थे। बसवराज पाटिल मुरमक्कर को लेकर अब यह चर्चा है कि वो भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो सकते हैं। हालांकि, इसे लेकर अभी तक उनकी ओर से कोई अधिकारीक बयान नहीं आया है। मालम हो कि हाल के दिनों में महाराष्ट्र कांग्रेस के कई सीनियर नेताओं ने पार्टी की बैठक में दोषी ठहराया जा रहा है। उठान और बाबा सिंही के बाबू समर्थक पार्टी के बाबू सिंही ने यह जनकारी दी। भास्याकार के आरोप में उन्हें पहले ही दो मासमांते में दोषी ठहराया जा रहा है। जिसने उन्हें 10 साल के बीच जारी रखा है।

मंगलवार को सोमवार तक अभियन्यु परामर्श दे दिया। पाटिल 1999 से 2004 के बीच महाराष्ट्र सरकार में मंत्री रहे थे। वह ओमेश-लोहारा और औसा विधानसभा क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। वह 2019 के विधानसभा चुनाव में भी जग्यां के अभियन्यु परामर्श दे हार गए थे। कांग्रेस का दावा है कि पाटिल के हाथ का साथ छोड़ने से कोई फर्क नहीं पड़े वाला है। पार्टी नेता अभ्य सातुके ने बताया कि उनके साथ छोड़ने से कोई असर नहीं पड़ेगा, क्योंकि वह 2019 के चुनाव में हारने के बाद से जनता के साथ संपर्क में नहीं थे। बसवराज पाटिल मुरमक्कर को लेकर अब यह चर्चा है कि वो भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो सकते हैं। हालांकि, इसे लेकर अभी तक उनकी ओर से कोई अधिकारीक बयान नहीं आया है। मालम हो कि हाल के दिनों में महाराष्ट्र कांग्रेस के कई सीनियर नेताओं ने पार्टी की बैठक में दोषी ठहराया जा रहा है। उठान और बाबा सिंही के बाबू समर्थक पार्टी के बाबू सिंही ने यह जनकारी दी। भास्याकार के आरोप में उन्हें पहले ही दो मासमांते में दोषी ठहराया जा रहा है। जिसने उन्हें 10 साल के बीच जारी रखा है।

मंगलवार को सोमवार तक अभियन्यु परामर्श दे दिया। पाटिल 1999 से 2004 के बीच महाराष्ट्र सरकार में मंत्री रहे थे। वह ओमेश-लोहारा और औसा विधानसभा क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। वह 2019 के विधानसभा चुनाव में भी जग्यां के अभियन्यु परामर्श दे हार गए थे। कांग्रेस का दावा है कि पाटिल के हाथ का साथ छोड़ने से कोई फर्क नहीं पड़े वाला है। पार्टी नेता अभ्य सातुके ने बताया कि उनके साथ छोड़ने से कोई असर नहीं पड़ेगा, क्योंकि वह 2019 के चुनाव में हारने के बाद से जनता के साथ संपर्क में नहीं थे। बसवराज पाटिल मुरमक्कर को लेकर अब यह चर्चा है कि वो भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो सकते हैं। हालांकि, इसे लेकर अभी तक उनकी ओर से कोई अधिकारीक बयान नहीं आया है। मालम हो कि हाल के दिनों में महाराष्ट्र कांग्रेस के कई सीनियर नेताओं ने पार्टी की बैठक में दोषी ठहराया जा रहा है। उठान और बाबा सिंही के बाबू समर्थक प